भावी पीढ़ी को दिया जाने वाला नायाब तोहफा : पुस्तकें

पंकज गर्ग
रुड़की।

पुस्तकों से एक प्रकार की आत्मीयता होती है। जो लोग साहित्य पढ़ते हैं, वह इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि उन्हें किताबों का महत्व मालूम होता है, पुस्तकों में पाठकों को संवेदनाएं महसूस होती हैं। इनके पात्र जाने पहचाने प्रतीत होते हैं। लेखक अपने आस–पास जो भी देखता है, उसकी हकीकत पहचानता–समझता है। वह उनकी विसंगतियों से, उनके नकारात्मक पक्षों से दुखी होता है और उसे लिखता है जो कि हमारे समाज को उदाहरण दे सकें। पुस्तकें एक प्रकार से हमारी संगिनी हैं। इनमें देश भी है, विदेश भी है, कल भी है, आज भी है। बाहर भी है, भीतर भी है, संवेदनाएं भी हैं और बहारी संघर्ष भी है। पुस्तकों का जीवन में बहुत महत्व है और जो लोग पुस्तक से जुड़े हैं, उन्हें इनकी अहमियत पता है।

जो लोग पुस्तके पढ़ते हैं, वह रूचि के अनुरूप पुस्तकें पढ़ते हैं। यह फैसला उनका ही होना चाहिए कि उन्हें क्या पढ़ना है। सामान्य स्तर पर व्यक्ति लोकप्रिय साहित्य पढ़ना पंसद करता है। इसमें आनन्द का अनुभव होता है। अच्छी पुस्तक या साहित्य पढ़ने का मतलब यह है कि पढ़ने के बाद हम जो हैं उससे थोड़ा सा अलग महसूस करने लगते हैं या उसमें हमें प्रेरणा मिलती है।

प्राचीन ग्रन्थों को महत्व तो प्राचीन काल से ही दिया जाता रहा है, आधुनिक युग में भी प्राचीन ग्रंथों का महत्व कम नहीं हुआ है क्योंकि ग्रन्थ हमारी अमूल्य निधि हैं, ग्रन्थ शाश्वत होते हैं तथा इनमें ईश्वर की ही आवाज समाहित है, जो मनुष्य मात्र के लिये कल्याणकारी है। ग्रन्थ तो हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं जो हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। हमारे ग्रन्थ राष्ट्र की धरोहर है इसमें गीता, कुरान महाभारत, रामायण, गुरूग्रन्थ साहिब, बाइबल आदि ये सभी अमूल्य ग्रन्थ है, आलौकिक हैं, इनके पढ़ने मात्र से ही मन की कलुषता दूर हो जाती है, विपत्तियों में आशा की किरण दिखाई देने लगती है। हम कितने भी आधुनिक हो जायें, लेकिन ग्रन्थों की महत्व के आगे सब कुछ गौण है, युवा पीढ़ी को तो विशेषकर इन ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए इनके अनुकरण मात्र से भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

पिछली सहस्त्राब्दी के दौरान हुई नई खोजों में पुस्तक सबसे महत्वपूर्ण है। यह विश्व में राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना से पहले की खोज है। भारत का स्वतंत्रता संग्राम दुनियाभर में अनूठा है क्योंकि उसकी कमान लेखकों के हाथ में थी। सर्वश्री इकबाल, टेगौर, निराला, पन्त सुबह्मयण, भारती आदि जैसे लेखकों ने आजादी मिलने से बहुत पहले ही वैचारिक स्वतंत्रता प्रदान कर दी थी।

सूचना और संचार बदलते विश्व के सबसे शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र बनते जा रहे हैं। पिछले दो दशकों में सूचना तन्त्र अत्यधिक सशक्त हुआ है उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं। लेकिन पुस्तकों का महत्व इस विस्तार के बावजूद अक्षुण्ण है।

पुस्तकें प्रेरणा का भण्डार होती है; उन्हें पढ़ कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना जागृत होती है। महात्मा गांधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरा का भरपूर योगदान था। भारत की आजादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी पुस्तकें किसी भी विचार–संस्कार या भावना के प्रचार का सबसे शक्तिशाली साधन है। हमारे प्राचीन ग्रन्थो ने आने वाली शताब्दियों को पूरी तरह प्रभावित किया। आजकल विभिन्न सामाजिक तथा विविध विचार धाराएं अपने प्रचार–प्रसार के लिये पुस्तकों को उपयोगी अस्त्र के रूप में अपनाती है।

पुस्तकें प्रकाश गृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई है, यदि हजारों वर्ष पूर्व ज्ञान की पुस्तके अगले युग तक न पहुंचती तो शायद वैज्ञानिक सभ्यता का जन्म न होता।

विपिल महोदय

पुस्तकें आज की मानव सभ्यता के मूल में हैं, पुस्तकों द्वारा एक पीढी का ज्ञान, दूसरी पीढ़ी तक पहुंचते–पहुंचते सारे युग में फैल जाता है। पुस्तके हमारी मित्र हैं, वे अपना अमृतकोष सदा हम पर न्यौछावर करने को तैयार रहती हैं। अच्छी पुस्तकें हमारा मनोरंजन करने के साथ–साथ हमें रास्ता दिखाने का कार्य करती हैं। बदले में हमसे कुछ नहीं लेती, न ही परेशान करती हैं। इससे अच्छा कौन सा साथी हो सकता है जो केवल कुछ देने का हकदार हो लेने का नहीं। मनुष्य अपने एकांत क्षण में पुस्तकों के साथ गुजारा कर सकता है। पुस्तकों के साथ हम अकेले होते हैं इसलिए मनोरंजन का आनन्द और अधिक गहरा होता है। किसी ने कहा है– पुस्तकें जागृत देवता हैं, उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, पुस्तकों द्वारा किसी महापुरूष को हम जितना जान सकते हैं, उतना उसके मित्र या पुत्र तक भी नहीं जान सकते। अध्ययन शील पुरूष एकान्त में अपनी पुस्तकों द्वारा अपने हृदय भाव को बेधड़क खोल कर प्रकट कर देते हैं। उनको पुस्तकों द्वारा हम पूर्ण रूप में देखते हैं। थोड़ा सोचिये तो इससे बढ़ कर आनन्द और क्या हो सकता है कि हमारी अपनी कोठरी में (निजि लाइब्रेरी) कालिदास, चन्द्रवरदाई, तुलसी दास, सूरदास, रहीम आदि जैसे साथी आराम के साथ लेटे हैं। जब भी हमारा मन होता है तब हम उनकी की कहानी सुनकर अपना समय काटते हैं। इस प्रकार की जहां एक मण्डली लगी, वहां कोई और साथी न रहे तो क्या? पुस्तकों की इससे अच्छी व्याख्या सम्भव हो ही नहीं सकती।

विश्व बाजार में भारतीय पुस्तकों का अहम स्थान है। एक तो हमारी पुस्तकों की गुणवत्ता बेहतरीन है, दूसरा इनकी कीमतें कम है। भारत, दुनिया में सबसे विशाल पुस्तक बाजारों में से एक है, इसी कारण हाल के वर्षों में विश्व के कई बड़े प्रकाशकों ने भारत की ओर रूख किया है। भारत में भी मंहगाई, अवमूल्यन और प्रतिकूल सांस्कृतिक सामाजिक–बौद्विक परिस्थितियों के बावजूद पुस्तक प्रकाशन क्रांतिकारी दौरे से गुजर रहा है। छपाई की गुणवत्ता में परिवर्तन के साथ–साथ विषय की विधिधता यहां की विशेषता है। समसामयिक प्रकाशन एक रोमांचक और भाषीय दृष्टि से विविधतापूर्ण कार्य है। भारत विश्व में एक मात्र ऐसा देश है जहां 37 भाषाओं में व 85000 से 100000 तरह की पुस्तकें प्रतिवर्ष छपती है।

पुस्तक मेलें

दुनियाभर में हर साल आयोजित होने वाले पुस्तकमेलें बानगी हैं हाल–फिलहाल में काले अक्षर का जादू उतरने वाला नहीं है। एक बात और, टी.वी., इन्टरनेट, ई–बुक्स व अन्य माध्यमों ने पुस्तकों की मांग को बढाया ही है। दक्षिणी एशिया में प्रमुख वार्षिक अन्तराष्ट्रीय पुस्तक मेलें, गवाह हैं कि उनकी रंगत केवल और केवल भारतीय पुस्तको की बदौलत हैं, चाहे हायर एजूकेशन की पुस्तकें हों या फिर नेपाली, उर्दू, सिन्धी और तमिल पुस्तकें। इन अन्तराष्ट्रीय मेलों में भारत का डंका बजता है विश्व बाजार में भारतीय पुस्तकों का अहम योगदान है, एक तो हमारी गुणवत्ता बेहतरीन है दूसरे इनकी कीमते कम हैं।

पुस्तक मेला कई मायनों में विश्व का अनूठा अवसर होता है जहां एक साथ इतनी अधिक भाषाओं में, इतने अधिक विषयों पर पुस्तकें देखने को मिलती हैं। यहां आने वालों की लाखों की भीड़, विश्व और देश की विविधता और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों का जमावड़ा, होता है। बिना पुस्तक का समाज बिना हृदय के शरीर की तरह है। विश्व पुस्तक मेला ज्ञान का ऐसा भण्डार है जहां मस्तिष्क की बन्द खिडकियां खुल जाती हैं। कितने सारे विचार, कितनी सारी भाषा, कितने

स्वरूपों में यह विविधता, हमारे देश की विशेषता भी है। पुस्तके शान्ति की दूत होती हैं ये न केवल व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के रूप में हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं बल्कि हमें यह आभास की कराती हैं कि पूरी मानवता एक है।

भारतीय परिवेश–एक नजर

- ❖ भारत विश्व में सम्भवतः एक मात्र ऐसा देश है, जहां 37 से भी अधिक भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।
- ❖ अमेरिका और ब्रिटेन के बाद अंग्रेजी पुस्तकों के प्रकाशन में भारत का तीसरा स्थान है।
- ❖ यहां प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में 25 प्रतिशत हिंदी, 20 प्रतिशत अंग्रेजी व शेष 55 प्रतिशत पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होती हैं।
- ❖ भारतीय प्रकाशन जगत का सालाना सकल कारोबार 10,000 करोड़ से भी अधिक है।
- ❖ लगभग 16 हजार से भी अधिक प्रकाशक सक्रिय रूप से इस महान कार्य में लगे हैं।
- ❖ प्रत्येक वर्ष 85 हजार से एक लाख तरह की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं।
- ❖ कारोबार वृद्धि की दर प्रतिवर्ष 18–20 % है।
- ❖ भारतीय पुस्तकें विश्व के 130 देशों को निर्यात की जाती हैं।
- ❖ भारत में एक व्यक्ति सप्ताह में औसतन 10.7 घन्टे पढ़ने में बिताता है।

विश्व

पुस्तकों की दुनिया बड़ी रोचक और निराली है। ये ज्ञान–विज्ञान के खजाने हैं; इतिहास और समाज के आईना है। तरह–तरह की जानकारी देती ये पुस्तकें हमारे जीवन को समृद्ध करती हैं। हमें इस योग्य बनाती हैं कि अपने पैरों पर खड़े हो पाएं और समाज को नई दिशा दे सकें यहां पर हम उन पुस्तकों का वर्णन कर रहे हैं जिनका ऐतिहासिक महत्व है। इतना ही नहीं इसकी खरीदारी सामान्य करोड़पतियों के बस की बात नहीं। ज्ञान ही नहीं, ये पुस्तके मूल्य के लिहाज से भी खजाने ही हैं।

सबसे महंगी पुस्तक

"द कोडेक्स लिसेस्टर" लेखक प्रख्यात चित्रकार "लियानार्दो द विंची" वे एक वैज्ञानिक भी थे, 72 पृष्ठ की पुस्तक 16वीं शताब्दी में हाथ से लिखी गयी। इसे बिल गेटस ने 30.80 मिलियन डालर (एक अरब 70 करोड रूपये) में खरीदा।

सबसे छोटी पुस्तक

इसका आकार केवल 0.75 मि.मी. गुणा 0.75 मि.मी है। इसे प्रकाशित किया है जापानी प्रकाशन कम्पनी "तोप्पन" ने। चार ऋतुओं के फूल के नाम से छपी इस पुस्तक में जापान के सारे पौधों का विवरण है।

सबसे बड़ी और भारी पुस्तक

यह रिकार्ड "दिस इज मोहम्मद" के नाम है। अरबी में लिखी इस पुस्तक का वजन 1500 किलोग्राम है। पन्नों की कुल सख्यां 420 है। इसके पन्नों की लम्बाई 5 मीटर व चौड़ाई 4 मीटर है। इसे सऊदी लेखक डॉ अब्दुल्ला अजीज अल मुस्लिन ने लिखा। पुस्तक का उद्देश्य इस्लाम के संदेश को दुनिया भर में फैलाना था। चमड़े और कागज से बनी पुस्तक को बनाने में 100 लोगों को 16 महीने लगे।

दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली तीन पुस्तके हैं।

1. दी होली बाइबिल
2. कोटेशन फ्राम चेयरमैन माओ–त्से–तुंग

3. हेरी पोर्टर

- हर साल विश्व में प्रकाशित होने वाली लगभग 1.2 मिलियन पुस्तकों में सिर्फ 2% पुस्तकें ऐसी हैं जिनकी पांच लाख से ज्यादा प्रतियां बिक जाती हैं।
- टाइपराइटर का प्रयोग कर लिखी पहली पुस्तक थी मार्कट्वेन की "द एडवेंचर आफ टॉम सॉयर"।
- विश्व के किसी भी देश की तुलना में सबसे अधिक पुस्तकें आइसलैण्ड में पढी जाती है। एक शोध के आधार पर जिन्हें पुस्तकें पढ़ने का शोक होता है उन्हें अल्जाइमर होने की आशंका कम रहती है।
- दुनियाभर में बिकने वाली पुस्तकों में 68 प्रतिशत महिलाओं द्वारा खरीदी जाती हैं।
- ब्रिटेन के ब्रिटिश म्युजियम में 50 लाख पुस्तकों का संग्रह है।

पुस्तकों का मंदिर–पुस्तकालय

वह केन्द्र जहां भिन्न–भिन्न विषयों की पुस्तकों का संग्रह किया जाता है पुस्तकालय कहलाता है। यहाँ पर सर्वमान्य की रूचियों को ध्यान में रखकर धर्म, इतिहास, दर्शन, शिक्षा, व्याकरण, विज्ञान, भूगोल, निबन्ध, कविता, कहानी, उपन्यास आदि सभी पुस्तकें वर्गीकृत रूप में रखी जाती हैं।

कुछ पुस्तकें बहुमूल्य होती हैं, उनका प्रयोग सर्वकालिक होता है जैसे विश्वकोष, शब्दकोश आदि। कई पुस्तकें बार–बार पढ़ने से पुरानी पड जाती हैं। कई पुस्तकें प्राचीन ग्रन्थ, दुर्लभ दस्तावेज और पाण्डुलिपियों के रूप में सुरक्षित होते हैं। पुस्तकालय प्राचीन और नवीन के बीच परिचय सूत्र या सम्बन्ध जोड़ने वाली कड़ी का काम करते हैं।

हमारे देश में प्रकाशन का इतिहास 300 वर्ष पुराना हो गया है, इसके बावजूद अंसगठित, अनियोजित, अल्पकालिक प्रकाशक आज भी इस व्यवसाय पर हावी है। इसकी छवि पुस्तक मेलों में देखने को मिलती है। भारत की आबादी का केवल 74% प्रतिशत साक्षर है अर्थात 89 करोड़ लोग लिखपढ़ सकते हैं। यह बात सत्य है कि सभी साक्षर लोगों का रूझान पुस्तक पड़ने में नहीं होता है। लेकिन व्यवसाय की दृष्टि से यह एक बड़ा उपभोक्ता वर्ग है जो मनोरंजन, ज्ञानवर्धक, समय काटने, सूचना लेने जैसे कार्यों में पुस्तकों पर निर्भर रहता है। जरूरत इस बात की है कि समाज के प्रत्येक वर्ग की अवश्यकता को समझा जाये, उसके अनुरूप पुस्तकें तैयार की जाएं और उलब्धता हो। हमारी पठनीयता का स्तर विश्व स्तरीय हो, इसके लिये विदेशी पुस्तकों की कोई जरूरत नहीं है। जरूरत है, अपने पाठकों की जरूरत समझने की और उनके अनुरूप प्रकाशन करने की।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

(नरेंद्र मोदी, प्रधान मंत्री)